P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नरेश मेहता के काव्य में रसों का विवेचन

शशि बाला रावत
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
हे0 न0 बहु0 गढ़वाल केन्द्रीय
वि0 विद्यालय, श्रीनगर
गढ़वाल

सारांश

भारमुनि ने ''रस'' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि – ''रस्यते इति रसः अर्थात जो चखा जाय या जिसका आस्वादन किया जाय,वही रस कहलाता है। काव्यानुभूति सर्वथा आनन्दमयी होती है,परन्तु कभी–कभी उद्वेगकारी एंव दुःखात्मक भी होती है। अतः उसे ब्रहमानन्द सहोदर नहीं कहा जा सकता। हृदय की सधन और निर्बाध अनुभूति जब शब्दों के घुंघरू बांध सकर स्वर ताल के यौवन के साथ झूम उठती है। तो उसे मानकर आनन्द को रस कहा जाता है। प्राचीन आचार्यो ने रसतत्व को काव्यात्मक के रूप में घोषणा की है। आचार्य भरतमुनि ने नहिं रसादृते कश्चिदव्यर्थ,प्रवर्न्ततेः कहकर काव्य में रस की अपरिहार्य स्थिति को व्यक्त किया है। भरतमुनि जी का प्रसिद्ध सूत्र–''तत्र विभावनुभावव्यभिचारी ब्राह्मण संयोगाद्रस निष्पतिः'' अर्थात विभाव अनुभाव कारक है। हिन्दी समीक्षा शास्त्र में रस के शास्त्रीय पक्ष का नवोत्थान बीसवी शताब्दी के आरम्भ में हुआ है।

मुख्य शब्द : नरेश मेहता, काव्य, रस।

प्रस्तावना

नरेश मेहता का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था, वे संस्कार से ही आर्ष परम्परा में निष्णात थे, मालवा के शाजापुर कस्बे में 15 फरवरी सन् 1922 को नरेश मेहता का जन्म हुआ था। मेहता जी ने अपनी बाल्यावस्था ही पूरी कर पाये थे कि उनकी माता का देहान्त हो गया था। पिता पंडित बिहारी लाल के तीन विवाह हुए थे। उनकी प्रथम पत्नी बिना संतान के मुख देखे ही स्वर्गवासी हो गई। और दूसरी पत्नी एक पुत्री को जन्म देकर इस संसार से चल बसी थी। तीसरी पत्नी एक पुत्र को जन्म देकर मृत्यु को प्राप्त हो गई। अतः पंडित बिहारी लाल एक से असंग हो गये थे और उन्हे भौतिक सुखों से विरक्ति हो गई थी। नरेश मेहता जी के बाबा एक पुरूषार्थी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके दो और पुत्र थे – पंडित शंकरलाल मेहता और पंडित राम नारायण महेता। पं0 राम नारायण मेहता ने सन् 1914 में प्रथम श्रेणी में बी0ए0 पास किया था। चाचा श्री शंकर लाल मेहता जिनके संरक्षण में मेहता जी का बात्या जीवन व्यतीत हुआ था। उनके चाचा धार राज्य में हेड मास्टर थे, बाद में वे डिप्टी कलेक्टर हो गये। उनका व्यक्तिगत अत्यन्त रौबीला एवं विविध था। उन्होंने बालक नरेश को अपने पुत्र के रूप में स्वीकार किया था। नरेश मेहता चार वर्ष की उम्र में इनके पास चले गये थे। चाचाजी का वैभवपूर्ण वातावरण मेहता जी का बचपन का वातावरण था। जहॉ एक ओर मोटर बंगला और नौकर–चाकर से परिपूर्ण उनका घर था। वही अत्यन्त गहराई में उनकी मॉ की मृत्यु तथा पिता से विद्रोह की कसक बालक नरेश के मन में अवश्य थी। मेहता जी ने स्वंय कहा है कि मेरे व्यक्तित्व में दो ही व्यक्तित्व में दो ही व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। साहित्य असंग व्यक्तित्व पिता,सौन्दर्य व क्रोधी व्यक्तित्व चाचा मेहता जी का विमाता से एक बहिन भी जिसका नाम शान्ति था शान्ति जी से मेहता जी का बहुत लगााव था। शान्ति उनके लिए बहिन ही नही बल्कि मात्रतुल्य भी थी। शान्ति को कविता लिखने ने का शौक था। शान्ति की मृत्यु सन् 1952 में हुई थी। जब नरेश जी दस वर्ष के थे। मेहता जी का पारिवारिक अभियान पूर्ण शंकर–शुल्क का था। नरसिंह गढ़ की राजमाता ने नरेश को उनकी काव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर उन्हे नरेश नाम दिया था। मेहता तो उनकी एक पदवी थी जो उनके पूर्वजो की परिचायक है। मेहता जी के पारिवारिक जीवन का पूरा–पूरा प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ा।

भारतीय वाड्मय के प्राचीन शब्दों में से रस शब्द महत्वपूर्ण तथा पुरातन है। भरतमुनि रस को आनन्द के उत्कर्ष तक ले जाने वाले प्रर्वतक भी है। संस्कृत साहित्य में रस के दो स्वरूप प्राप्त होते है। एक अविष्करात्मक दूसरा शास्त्रीय ऋगवेद उपनिषद रामायण महाभारत तथा अन्य काव्य, नाटको में रस

का प्रथम रूप वर्णित है। ऋगवेद एंव अथर्ववेद में इसका प्रयोग गौ दुग्ध, मधु, सोमरस आदि अर्थो में हुआ है। भरतमुनि नाटयशास्त्र में प्रकट किया है न रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्त्तवे। क्योंकि रस के बिना अर्थ नाटयाँग रूप प्रवृत नही हो सकता। अतः सूत्र में रस की निष्पति का आख्यान है। स्वरूप का नही। भदृनाटक ने रस में दर्शक की स्थिति को महत्वपूर्ण माना तथा रस की मुक्ति पर ही ध्यान दिया है। आचार्य अभिनवगुप्त रा को व्यंजनावादी व्याख्या प्रस्तुत करते है। रस काव्य का अन्यतम ही नही परम महनीय तत्व है। इस भाव की अभिव्यक्ति साहित्य–शास्त्रीय ग्रन्थों में आत्मा,अंगी, प्रधान–प्रतिपाद्य स्वरूपाधायक एवं अलंकार्य आदि पदो से होती है। दण्डी ने गुणो का रस से सम्बन्ध जोड़ते हुए रस के महत्व को स्वीकार किया। वामन के रस गुणो की कान्ति के रूप में उनका मूल माना जाता है। आचार्य भरतमुनि ने आठ रसों में से चार रस,श्रृंगार,रौद्र, वीर, वीभत्स को मूल तथा शेष चार हास्य, करूण, अद्भूत और भयानक को इन्हीं मूल रसों से उत्पन्न मानकर इनकी उत्पत्ति,वर्ण, देवता आदि के सन्दर्भ में प्रकाश डाला है।

नरेश मेहता के काव्य में अंगी रस को स्वीकार किया गया है। अंगी रसों में श्रृंगार–रस स्थायी भाव, आलम्बन, उद्दीपन, अनुभव संचारी आदि को अंगी रस में प्रकट किया गया है। नरेश मेहता के कात्य में संयोग–श्रृंगार, विप्रलम्भ, पूर्व–राग, मान, प्रवास, करूण आदि का वर्णन किया गया है। नरेश मेहता के कात्य में शांत रस की स्थापना की संक्षिप्त रूप प्रकट किया है। संस्कृत कात्य शास्त्र में आचार्यो का बहुमत इस पक्ष में है कि–कात्य में विभिन्न रसों की प्राप्ति होने पर भी एक रस प्रधान या अंगी रस तथा अन्य रस पोषक या अंग होने चाहिए। नरेश मेहता की मुक्तक और प्रबन्ध कृतियों को रस की कसौटी पर कसने से स्पष्ट होता है कि नरेश मेहता ने यद्यपि समस्त रसों का अधिकाधिक मात्रा में प्रयोग किया है। किन्तु प्राधान्य 'वीर रस' तथा श्रृंगार रस को ही प्राप्त होता है। आचार्य भरतमुनि ने 'श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भूत' रस को नाट्य या कात्य में स्वीकार किया है। श्रृगांर शब्द की उत्पत्ति 'श्रृंग' धातु से हुई है। इसका अर्थ कामोद्रेक श्रृंगार और और आर दो शब्दों के आचार्य मम्मट ने कात्य प्रकाश में कहा है किवास्तव में दाम्पत्य रति को ही श्रृंगार कहा जा सकता है। रति नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी–भाव के संयोग से पुष्ट होकर श्रृंगार रस कहलाता है। श्रृंगार रस के अन्तर्गत स्त्री और पुरूष के पारस्परिक प्रेम का वर्णन होता है। नौ रसों में सबसे अधिक श्रृंगार रस का महत्व है। तत्व ज्ञान, ससांर की असारता, सांसारिक पदार्थो की असमारता तथा परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने पर शान्त रस की निष्पति होती है। शान्त रस की स्थायी भाव 'शम' है। मेहता जी के कात्य में रस '' श्रृंगार की स्त्रोतस्विनी अपनी निश्चल गति से शान्त रस का सहारा लेती है। अतः श्रृंगार एवं शान्त–रस को अंगी–रस को अंगी–रस के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः नरेश मेहता के कात्य में शान्त–रस का अद्भुत निरूपण किया गया है।

करूण रस

करूण रस का स्थायी भाव 'शोक' प्रिया के मरण या अनिष्ट की आशंका, इष्ट वस्तु की हानि आदि से जहॉ शोक का भाव परिपुष्ट होता है। वहॉ करूण रस की उत्पत्ति होती है।

वीर रस

वीर रस का स्थायी उत्साह है। शत्रु का उत्कर्ष तथा उसकी ललकार आदि से किसी व्यक्ति के हदय में उसको मिटाने के लिए भाव जाग्रत होता है। वह परिपक्व होकर वीर रस कहलाता है।

वात्सल्य रस

वात्सल्य रस का स्थायी भाव ''वाल्सलयता'' है। वत्स अर्थात् पुत्रादि के विषय में रति को वात्सत्य कहते है। जहॉ इस प्रकार का वात्सल्य भाव विभावादि से परिपक्व हो कर रस की स्थिति में पहुॅचाता है। वहॉ वात्सल्य होता है।

रौद्र रस

रौद्र रस कर स्थायी भाव ''क्रोध'' है। अपने से प्रतिकुल विषय में तीक्ष्णता का अनुभव क्रोध कहलाता है। इष्ट–सिद्धि में किसी प्रकार का विरोध क्रोध का कारण होता हैं क्रोध ही परिपक्व होकर रौद्र रस बनता है।

अद्भुत रस

अद्भुत रस का स्थायी भाव ''विस्मय'' है। विभिन्न पदार्थो में लोकान्तरता देखकर, जो फैलाव होता है। उसे विस्मय कहते है। नाट्यशास्त्र में कहा गया है– विस्मयों हर्ष सम्भवतः अद्भुत रस का उदाहरण तभी उपस्थित होता है। जबकि आलम्बन में कोई अद्भुत बात हो।

भयानक रस

भयानक रस का स्थायी भाव भय है। अनिष्ट की संभावना देखने से चित्त में जो अनिष्ट होने की प्रबल सम्भावना रहती है। भयानक वस्तु की चेष्टायें उद्दीपन, प्रलय, रोमांच, अनुभाव, जुगुप्सा, मोह आदि संचारी भाव है।

वीभत्स रस

वीभत्स रस का स्थायी भाव ''धृणा या जुगुप्सा'' है। घृणित वस्तुओं के पढ़ने, सुनने या देखने से जो ग्लानि जागती है। वहॉ वीभत्स रस उत्पन्न होता है। घिनौने दृश्य वीभत्स के आलम्बन है।

हास्य रस

हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' है। विकृत वेषभूषा, वाणी, चेष्टा आदि को देखकर हृदय में जो विनोद का भाव जागृत होता है वहाँ "ह्यस्य रस" होता है। वहीं विभाव, अनुभाव, संचारी से पुष्ट होकर "हास्य रस'' में परिणित हो जाता है। नरेश की कविता में प्रेम और हास्य रस को आत्मसात करने के लिये प्रकृति को उनके गहरे आत्मसात् करना है।

उद्देश्य

रस सिद्धान्त में एक ओर काव्य में, भावो में एव मनोवेगो के चित्रण की बात है तो दूसरी ओर काव्य के आस्वादन का विवेचन है। रस अपने संकुचित अर्थ में भावों और मनोवमगो के चित्रण तक सीमित रहता है। तथा

अपने व्यापक अर्थ में वह काव्य के आस्वादन के योग्य बन जाता है। अतः रस के इसी व्यापक अर्थ मे रस सिद्धान्त सम्रग काव्य को अपनी रोचकता अथवा रमणीयता या मन को रमाने की शक्ति प्रदान करता है।काव्य शास्त्रीय क्षेत्र मे जितना समादार रस को मिला उतना किसी अन्य काव्य–काव्य को नही । भामह, दण्डी और उद्भट ने यद्यापि रस भाव आदि को रसवद् आदि अलंकार नाम से अभिछित किया । भरतमुनि अपने प्रसिद्ध रस–सूत्र विभावनुभावव्यभिचारी संयोगद्रस निष्पत्ति में रस विषयक धारण व्यक्त की है। जिस प्रकार नाना प्रकार के व्यजनों , औषधियों और दव्यों के संयोग से रस की निष्पति होती है, उसी प्रकार गुणादि द्रव्यों व्यंजनों और शास्त्र में आठ प्रकार के रस माने है अ–श्रृंगार हास्य कारण रौद्र भयानक वीभत्स और अद्भुत । अतः डॉ0नगेन्द्र ने स्थायीभाव और संचारी भावों का भाव के अन्तर्गत ही समाहित करके रसों का विवेचन किया गाया है।

निष्कर्ष

विवेच्य कवि नरेश मेहता के सम्पूर्ण रचना संसार की प्रत्येक पंक्ति सहृदय को आनन्द के अलौकिक धरातल पर ले जाती है। चाहे राष्ट्रीय –भावना हो या श्रृंगारी अनुभूति पाठक रस मग्न स्थिति से उसका आस्वादन करता है। वस्तुत सहृदय पाठक अथवा प्रेक्षक आत्मानन्द हेतु ही काव्य पढता या नाटक देखता है। और यह प्रधान तत्व कथ्य की रसात्मकता पर ही आधारित है। यद्यपि अन्य सिद्धान्तों का भी काव्य पर प्रायः प्रभाव पड़ता है। रस काव्य के अन्तर्मन से संबध रखता है। जीवन में परम आनन्द की खोज करने वाले भारतीय दार्शनिक की भाँति काव्य में भी आनन्द की गवेषणा की है। अतः नरेश मेहता के काव्य में करूण, वीर, वात्सल्य, रौद्र, अद्भुत, भयानक, वीभत्स, हास्य आदि रसों को अंगीभूत रसों में स्वीकार किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मेहता द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर।
2. विश्वनाथ– साहित्य दर्पण पृष्ठ– 226
3. रस सिद्धान्त– डॉ0 नगेन्द्र–पृष्ठ–12
4. रस सिद्धान्त – डॉ0 नगेन्द्र–पृष्ठ–16